Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal
ISSN No : 2230-7850
Impact Factor : 3.1560 (UIF) [Yr. 2014]

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF) Volume - 5 | Issue - 12 | Jan - 2016

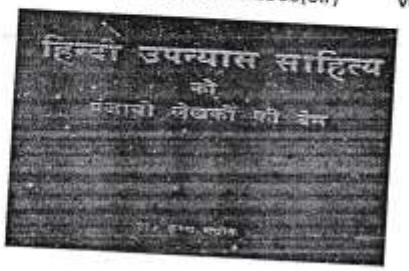

पत्की ए. बी.

स्त्री विमर्श और हिंदी उपन्यास

पत्की ए. बी.
सहा. प्राध्यापक, नूतन महाविद्यालय, सेलू जि. परभणी.

सारांश :

स्त्री ईश्वर की अदभुत सृष्टि है। स्त्री शक्ति, शील और सौंदर्य की मूर्ति है। पुराने जमानें से लेकर भारत में शक्तिपूजा की परंपरा रही है। स्त्री सशक्तिकरण की बात सदियों से चली आ रही है । और यही सशक्तिकरण उपन्यासों के माध्यम से भी व्यक्त होता दिखाई दे रहा है। स्त्री संघर्ष करते हुये आगे बढ़ रही है। उसके सामने अनेक चुनौतियां है उनका सामना भी बड़े धैर्य के साथ कर रही है। स्त्री – विमर्श अर्थात स्वत्व को खोजने की प्रक्रिया है। अपनी पहचान शक्ति और सत्ता को जानने की कोशिश करते हुये स्त्री जागरण की बात उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त होती दिखाई देती है। उपन्यास समाज के साथ चलने वाली साहित्यीक विधा है। साहित्यिक विधा में स्त्री को सही रूप से जानने पहचानने की कोशिश की गयी है।

प्रस्तावना :

वर्तमान शताब्दी सशक्तिकरण एवं स्त्री विमर्श के नाम है। जब से महिला सशक्तिकरण वर्ष मनाया गया तभी से नारी, महिला व स्त्री शब्द विषय या मुद्दों के सागर की अतल गहराई से धरातल पर उभरकर मानो एक तरह से उछलकर सामने आये है। यह शब्द अपनी अर्थवत्ता चाहें जितनी गइराई से बना सका हो किंतु यह सभी जागरुक लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों, व्यवसायियों, उद्यमियों, विज्ञापनदाताओं, समाज सेवियों, कार्यकर्ताओं, मीडिया, फिल्म यहाँ तक की विश्वस्तरीय समस्त जगत में उथल पुथल मचा देनेवाला आकर्षक चौंकाउ शब्द सिध्द होकर आया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि, आज हर कोई अपने ढंग से स्त्री के लिए सोच रहा है और स्त्री के उत्थान की बात कर रहा है। साहित्य का ज्वलंत मुद्दा स्त्री–विमर्श है। लेखक, साहित्यकार व बुध्दिजीवी है और यह भी सदियों से शोषित, दलित, पीछे धकेली गयी स्त्री को ही केंद्र में लाने के लिए संघर्षरत है। हर तरफ स्त्री की गुहार है, पुकार है, उसके लिए कुछ करने का जुनून न केवल स्त्री स्वंयसेवी संस्था व संगठनो में है वरन् स्वयं महिलाओ में भी ऐसी सक्रियता तथा सजगता पनप रही है।

'नारी को आदिशक्ति' भले ही कहा गया हो पर यह पुरुष के इस कथित 'अंतिम निर्णय' की लक्ष्मण रेखा को कभी नही लांघ पाती। घर से बाहर भले ही अपना स्वर मुखर करले, मगर घर की डयोढ़ी चढ़ते हुए उसकी सारी शक्ति, क्षमता, सामर्थ्य एवं स्वातंत्रता चौखट के बाहर रह जाती है। जब तक नारी के इस स्वयनिर्णया स्वतंत्र फैसले करने का का अधिकार नही जगता है तब तक वह स्वतंत्र मानी ही कब जायेगी? अब वह समय चुक गया है जहाँ स्त्रियाँ बच्चे, गृहस्थी, सिलाई, बुनाई व परंपरागत वस्तू बन सुहाग चिन्हो को धारण कर अपने में गौरवान्वित हो कर घर की चार दीवारो में कैद रहे। सब कुछ उसके निर्णय पर छोड़ दिया जायेगा कि वह क्या बन कर रहे?

यह है कि उसे अपने पाँवो पर खडा होना होगा। विद्रोह का झंडा पुरुषो के विरुध्द गाड़ने में नही चलेगा। उसे पुरुष मानसिकता को साथ लेकर चलना होगा जो उसके हक में ही सोचे।

आधुनिक युग में हिंदी साहित्य में उपन्यास, नाटक, कहानी आदि विधा द्वारा नारी को किसी न किसी रुप मे प्रस्तुत किया है। उपन्यास नये युग के नये मनुष्य की विधा है। विविध विषयो को लेकर, समस्याओं को लेकर उपन्यास लिखे गये। साहित्य– समीक्षा में साठोत्तरी साहित्य की विशेष चर्चा हो रही है। उसका कारण यह है कि सामाजिक–राजनीतिक–वैश्विक स्थितियों का निरपेक्ष, यथार्थमूलक आकलन जितना इधर हुआ है या हो रहा है इतना पहले कभी नही हुआ। अब हम यहाँ पर साठोत्तरी हिंदी उपन्यासो की चर्चा करेंगे।

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में कदाचित पहली बार सन 60 के बाद स्त्री–पुरुष, पती– पत्नी, प्रेमी–प्रेमिका के संबंधो पर दृष्टिपात किया गया है। आज के उपन्यास की प्रमुख विशेषता है साधारण मनुष्य की अवधारणा। मनुष्य की इस साधारण छवि को उसकी समूची शक्ति–अशक्ति के साथ आकलित साठोत्तरी उपन्यास ने किया है। डॉ रामदरश मिश्र कृत 'जल टुटता हुआ ' बदमिया और लवंगी में मेहनत – मजदूरी करनेवाली स्त्री का चित्रण है। बदमिया और लवंगी ऐसे नारी पात्र है जिनका स्वर वैचारिक धरातल पर नवजागरण का संदेश देता है। जो प्रेमिका और साहसी स्वावलंबी विचारशील नारी है। नागार्जुन द्वारा रचित 'उग्रतारा' उगनी एक संघर्षशील नारी है। जो समय और परिस्थितियो को उनकी यथार्थ पृष्ठभूमि पर उतारती है। जो परिस्थितियों से समझौता न करते एक दृढ चरित्र की भाँति अपना जीवन जीती है। मणिमधुकर कृत 'सफेद मैमने' की सुरजा एक शक्तिशाली स्त्री के रुप में प्रस्तुत की गयी है। वह परिस्थितियों की शिकार होकर नही हारती बल्कि इससे और शक्ति आ जाती है। इसी तरह माला रामकुमार भ्रमर द्वारा रचित 'काँच घर' उपन्यास में माला का चित्रण हुआ है। जो अपने जीवन में अनेक अत्याचार सहन करती है। और अंत मे विरोध भी करती है। रामदरश मिश्र कृत 'सूखता हुआ गुलाब' की चेनैया चमारिन जो ग्रामीण जीवन में व्याप्त यौन भ्रष्टाचार को बेपर्दा करती है। जगदीश चंद्र द्वारा लिखित 'धरती धन अपना' में तानों एक प्रमुख नारीपात्र है जो अपने प्रगतिशील विचारों को लेकर आगे बढती है किंतु परिस्थितियों का शिकार बनकर उसके जीवन का अंत होता है। भगवती चरण वर्मा कृत 'रेखा' उपन्यास में रेखा एक ऐसा नारीपात्र है जो आत्म–निर्णय का क्षमता रखनेवाला पात्र है। ममता कालीया के उपन्यास 'नरक – दर– नरक' में उषा का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली दिखाया है। उसी तरह मन्नु भंडारी का प्रसिध्द उपन्यास 'आपका बंटी' है। जिसमें शकुन एक स्वावलंबी नारी है, जो अपने जो अपने पति को परास्त करने के लिए जीवन के एस वर्ष ज्यों– त्यों गुजार देती है, लेकिन अंतिम छोर पर अपने को परास्त पाती है। उषा प्रियवंदा के 'पचपन खंभे लाल दीवारें' की सुषमा जो अपने भाई बहनों तथा माँग को पुरा करने के लिए निमित्त अपने आपको समर्पित करती है।

लक्ष्मीकांत वर्मा कृत 'टेरा कोटा' उपन्यास की मिति एक सशक्त नारी पात्र है । जो आगे चलकर आई.ए.एस. की उच्च पदवी हासिल करके अपने कठोर परिश्रम से कलेक्टर बन जाती है, और अपने परिवार की सारी सुख–सुविधाओं की पूर्ति करती है। मोहन राकेश के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में नीलिमा को एक आधुनिक और स्वतंत्र व्यक्तित्वाली नारी के रुप में चित्रित किया है। निरुपमा सेवती के 'पतझड की आवाजें' की अनुभा एक आधुनिक नारी, स्वत्व और अभिमान का, संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। कुसुम अंसल के उपन्यास 'उस रात' की मुक्ता अनुभा की तरह पढाई के लिए खूब संघर्ष करती है। मंजुला भगत कृत उपन्यास 'अनारो' की नायिका अनारो एक संघर्षशील एवं परिस्थितियों से टकराने का साहस रखती है। कांता भारती कृत ' रेत की मछली' की नायिका कुंतल जिसके सामने अनेक समस्याएँ तथा संत्रासपूर्ण स्थितियाँ है, लेकिन उसकी चारित्रिक दृढता तथा प्रतिकूलताओं से टकराने की क्षमता श्लाघनीय कही जा सकती है। क्षितिज शर्मा कृत 'उकाब' की नायिका श्यामा जो किसी क्रांति का बिगुल नही बजाती, लेकिन यह भी सच है कि वह खुद को हालात और नियति के भरोसे भी नही छोड देती। नागार्जुन कृत 'उग्रतारा' उपन्यास की नायिका 'उगनी' भी एक क्रांतिकारी और विद्रोही नायिका है। हिमांशु श्रीवास्तव कृत 'नदी फिर बह चली' की परबतिया, गोपाल उपाध्याय कृत ' एक टुकडा इतिहास' कि चनुली अर्थात् चंदा देवी, मैत्रेयी पुष्पा कृत 'इदन्नमम्' की मंदा सुरेंद्र वर्मा कृत 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा वशिष्ठ, प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' की प्रिया ऐसे नारी चरित्र है जो समाज की जर्जर मान्यताओं को एक चुनौती मानकर उसका विरोध करती है, नई राह पर चलने का प्रयास करती है।

साठोत्तरी उपन्यासकारों के उपन्यासों में विचार, संवेदना और भाषा के धरातल पर स्त्री–विमर्श का वैश्विक आयाम ऐसी शक्ति मानी जाती सकती है जो आत्मपरक है, वैचारिक प्रस्थाख्यान है। इन उपन्यासाकारोंने काल और अवकाश की सीमा को लाँघकर और इतिहास की विरासत को नकारकर स्त्री विमर्श प्रस्तुत किया है। कल के सीमित स्त्री–विमर्श द्वारा स्त्री शिक्षा, घर से बाहर निकालना, विधवा– विवाह का समर्थन, अंधविश्वास आदि को समेटा गया था। यह मामुली बात नही । उसे गौन–क्रांति कही जा सकती है। इन उपन्यासकारोंने स्त्री विमर्श का जो परिचय दिया है, अपनी – अपनी अलग पहचान बनाने के लिए स्वतंत्रता के विविध रुपों को अपनाया । अपने प्रचलित दायरों को तोड़कर 'मैं' की शैली में लेखक – वाचक–पात्र–प्रसंगों सबसे सीधी बातचीत करने लगा है।

मनुष्य परंपरा को सुरक्षित रखने में स्त्री को केंद्रीय भूमिका देने का काम साठोत्तरी उपन्यासकारोंने दिया है। पुरुष आज भी समाज के केंद्र में है और स्त्री परिधि में है। आज वह तनकर खड़ी हो गई है। उसका अपना दृष्टिकोन बहुत कुछ बदल गया है। अब वह पुरुष के सम्मुख हारकर आत्मसमर्पण नही करती, अपनी पूरी शक्ति के साथ लड़ती है।

जब हम साठोत्तरी उपन्यासकारों के उपन्यासों की बात करते है तो मुझे ऐसा लगता है कि पुरुष रचनाकारों की और स्त्री रचनाकारों की दृष्टि अलग– अलग है। पुरुष रूढियों को तोड़ने का दिखावा कर रहा है। पर नारी के प्रति उसकी दृष्टि नही बदली। वही अहं आज भी पुरुष में मौजूद है। किंतु कुछ– कुछ परिवर्तन अब नये – नये उपन्यासों में दिखाई देता है। और यह परिवर्तन आवश्यक भी है क्योंकि जब तक शिक्षित वर्ग स्त्री के बारे में नये सिरे से नही सोचेगा और साहित्य में परिवर्तन नही दिखायेगा तब तक कोई परिवर्तन नहीं होगा।

मुझे ऐसा लगता है कि साठोत्तरी स्त्री लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री के अलग– अलग रूप हमें देखने को मिलते है, उनके अपने – अपने अनुभव है, आदर्श है, मंजिले है, वजूद है, उपलब्धियाँ है। यह अनुभव, आदर्श, वजूद उपन्यासों में व्यक्त हुआ है। वे उनकी अनुभूति है। चाहे स्त्री उपन्यासकार हो या पुरुष उपन्यासकार, इनके लेखन से हमारे समक्ष यह विचार उठा होता है कि क्या आनेवाला कल स्त्री भाषा को नया आकार देगा? क्या स्त्री–पुरुष को समान अधिकारों की प्राप्ता भी होगी या नही? क्या स्त्री के अस्तित्व को सही मायने में

हिंदी साहित्य पहचान पायेगा? क्या हिंदी उपन्यास में स्त्री – विमर्श चेतना के उस धरातल पर जाकर समय और पाठक से सीधा रिश्ता जोड़ पायेगा? यह सभी प्रश्न अनुत्तरित है या शायद इसके उत्तर मुझे नहीं मिल पाये।

1. स्त्री सशक्तिकरण के विविध आयाम – डॉ.ऋषभदेव शर्मा
2. स्त्री के लिए जगह – राजकिशोर
3. स्त्री उपेक्षिता – सीमोन दबोउवार
4. स्त्रीत्ववादी विमर्श – सुमा शर्मा
5. नारी अस्मिता : हिंदी उपन्यासों में सुदेश बगा
6. औरत, अस्तित्व और अस्मिता – अरविंद जैन
7. समकालीन महिला लेखन – डॉ.ओमप्रकाश शर्मा
8. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श – जगदीश्वर चतुर्वेदी
9. हिंदी महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना – डॉ. उषा यादव
10. आधुनिक कथा – साहित्य में नारी स्वरुप और प्रतिमा – डॉ.उमा शुक्ल